❍ 25 / 11 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗बाप को भूले तो नहीं ?∗

➢➢ ∗बुधी से बेहद का संन्यास किया ?∗

➢➢ ∗दिल की समीपता द्वारा सहयोग का अधिकार प्राप्त किया ?∗

➢➢ ∗श्रीमत के कदम पर कदम रखा ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗यदि किसी भी प्रकार का भारीपन अथवा बोझ है तो आत्मिक एक्सरसाइज करो।∗ अभी - अभी कर्मयोगी अर्थात् साकारी स्वरूपधारी बन साकार सृष्टि का पार्ट बजाओ, अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करो, अभी-अभी निराकारी बन मूलवतनवासी का अनुभव करो, इस एक्सरसाइज से ∗हल्के हो जायेंगे, भारीपन खत्म हो जायेगा।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं ड्रामा के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा हूँ"*

〰✧ इस ड्रामा के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं - ऐसे अनुभव करते हो? *जब अपने को विशेष आत्मा समझते हैं तो बनाने वाला बाप स्वत: याद रहता है, याद सहज लगती है। क्योंकि 'सम्बन्ध' याद का आधार है। जहाँ सम्बन्ध होता है वहाँ याद स्वत: सहज हो जाती है। जब सर्व सम्बन्ध एक बाप से हो गये तो और कोई रहा ही नहीं। एक बाप सर्व सम्बन्धी है - इस स्मृति से सहजयोगी बन गये।*

〰✧ कभी मुश्किल तो नहीं लगता? जब माया का वार होता है तब मुश्किल लगता है? *माया को सदा के लिए विदाई देने वाले बनो। जब माया को विदाई देंगे तब बाप की बधाइयाँ बहुत आगे बढ़ायेंगी। भक्ति मार्ग में कितनी बार मांगा कि दुआयें दो, ब्लैसिंग दो। लेकिन अभी बाप से ब्लैसिंग लेने का सहज साधन बता दिया है - जितना माया को विदाई देंगे उतनी ब्लैसिंग स्वत: मिलेंगी।*

〰✧ परमात्म-दुआयें एक जन्म नहीं लेकिन अनेक जन्म श्रेष्ठ बनाती हैं। सदा यह स्मृति में रखना कि हम हर कदम में बाप की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते सहज उड़ते चलें। ड्रामा में विशेष आत्मायें हो, विशेष कर्म कर अनेक जन्मों के लिए विशेष पार्ट बजाने वाले हो। साधारण कर्म नहीं विशेष कर्म, विशेष संकल्प और विशेष बोल हों। *विशेष सेवा यही करो कि अपने श्रेष्ठ कर्म दवारा.

अपने श्रेष्ठ परिवर्तन द्वारा अनेक आत्माओंको परिवर्तन करो। अपने को आइना बनाओ और आपके आइने में बाप दिखाई दे। ऐसी विशेष सेवा करो। तो यही याद रखना कि मैं दिव्य आइना हूँ मुझ आइने द्वारा बाप ही दिखाई दे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ यहाँ *बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा।* अगर अल्पकाल का अभ्यास है तो प्राप्ति भी अल्पकाल की होगी। तो ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगडता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो।

〰✧ लेकिन हलचल में फुलस्टॉप लगता है या नहीं - ये चेक करो। कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुलस्टॉप नहीं लगाने देगा। और *न्यारे-प्यारे होकर किसी कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगेगा।* क्योंकि बन्धन नहीं है।

〰✧ बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन *न्यारे होकर सम्बन्ध में आना* - यह अण्डरलाइन करना। *इसी अभ्यास वाले ही पास विद

ऑनर होंगे।* ये लास्ट कार्मतीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन वश नहीं। तो चेक करो कर्म करते-करते कर्म के बन्धन में तो नहीं आ जाते?

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *याद को भी सहज करो। जब यह याद का कोर्स सहज हो जायेगा। तब कोई को कोर्स देने में याद का फोर्स भी भर सकेंगे। सिर्फ कोर्स देने से प्रजा बनती है लेकिन फोर्स के साथ कोर्स से समीप सम्बन्ध में आते हैं।* बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे न्यारे और प्यारे। तो सभी सहज पुरुषार्थ में भी अगर मुश्किलातों में ही रहेंगे तो सहज और स्वत: का अनुभव कब करेंगे? *इसको कहते भी सहज योग हो ना? कठिन योग तो नहीं है। यह सहज योग वहाँ सहज राज्य करायेगा। वहाँ भी कोई मुश्किलात नहीं होगी। यहाँ के संस्कार ही वहाँ ले जायेंगे। अगर अन्त तक भी मुश्किल के संस्कार होंगे तो वहाँ सहज राज्य कैसे करेंगे?* देवताओं के चित्र भी जो बनाते हैं तो उनकी सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। यह विशेष गुण दिखाते हैं। *फीचर्स में सरलता जिसको आप भोलापन कहते हो। जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मनसा में भी सरल, वाचा में सरल, कर्म में भी सरल होगा। इनको ही फ़रिश्ता कहते हैं। अच्छा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अवगुणों को निकाल साफ़ दिल बन, सच्चाई और पवित्रता का गुण धारण करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकांत में बैठ मन की आँखों से प्यारे बाबा को निहारती हुई बाबा की यादों में खोई हुई हूँ... मन के तार बाबा से जुड़ते ही मैं आत्मा ऊपर की ओर खींची चली जा रही हूँ... और सुप्रीम चुम्बक बाबा से चिपक जाती हूँ... सुप्रीम रूहानी चुम्बक से चिपकते ही मुझ आत्मा के अवगुणों रूपी लौह तत्व भी रूहानी चुम्बक बन जाते हैं... *सारे अवगुण ख़त्म हो सच्चाई और पवित्रता का गुण धारण कर रही हूँ...*

❉ *प्यारे बाबा पवित्र दैवीय गुणों से मुझ आत्मा को भरपूर करते हुए कहते है:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता के साथ और प्यार के यह अनमोल पल व्यर्थ में न गंवाओ... ईश्वर पिता की मीठी यादो में देवतायी सौंदर्य, सच्चाई और पवित्रता के गुणो से भरपूर हो जाओ... *हर पल को यादो और सेवाओं में सफल कर श्रेष्ठतम भाग्य के अधिकारी बन मुस्कराओ...* संगम के अमूल्य पलो में खुबसूरत भाग्य की तकदीर बना लो..."

➳ ➳ *मैं आत्मा गणों के सागर में डबकी लगाते हुए कहती हूँ:-* "हाँ

मेरे प्यारे बाबा... मै आत्मा संगम के बहुमूल्य समय को पाकर ईश्वरीय यादो में... हर पल देवताई श्रृंगार से सज रही हूँ... प्यारे बाबा... *आपकी यादो में अपना खुबसूरत भाग्य सजा रही हूँ...* अथाह अमीरी और सुखो का रंग अपनी किस्मत की तस्वीर में भर रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा संगमयुग के अमूल्य क्षणों का राज बतलाते हुए कहते है:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... मीठे बाबा से अतुलनीय खजानो को बाँहों में भरकर 21 जनमो तक सदा सुखो में मुस्कराने का आधार यही वरदानी संगम के खुबसूरत पल है... *दिव्य गुणो और शक्तियो से सम्पन्न बनकर... खुशियो में झूमने का राज इन्ही पलो की ईश्वरीय यादो में समाया है...* इस समय को बेपनाह मुहोब्बत में डुबो दो... और स्वयं को सजा लो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा गुणों की खान, खजानों की मालिक बनकर ख़ुशी से कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मैं आत्मा आपको पाकर धन्य धन्य हो गयी हूँ... आपकी सारी दौलत को स्वयं में समाकर मालामाल हो रही हूँ... मीठे बाबा... मेरी हर साँस इस अमूल्य कमाई में जुटी है... *मै आत्मा पुरानी दुनिया को भूल हर पल सुखो के स्वर्ग में विचरण कर रही हूँ..."*

❊ *प्यारे बाबा रूहानी पुष्पों की वर्षा करते हुए कहते हैं:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... संगम के सुहावने समय को ईश्वरीय यादो में भिगोकर... अपने महानतम भाग्य की खुबसूरत तस्वीर सजा लो... सुखो, खुशियो और प्रेम के फूलो से अनोखे भाग्य को महका दो... *मीठे बाबा के प्यार भरी बाँहों में सदा मुस्कराते रहो... पुरानी दुनिया की मिटटी में अब मलिन न बनो... सिर्फ यादो की बहारो में खोये रहो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा पत्थर रूपी अवगुणों को निकाल पारस रूपी पवित्रता को धारण कर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आपकी यादो में कौड़ी से हीरे जैसी सज संवर रही हूँ... कभी खाली थकी निस्तेज सी मै आत्मा... आज पुनः अपने तेजस्वी स्वरूप को पाकर चमकती मणि हो गई हूँ... *व्यर्थ से परे होकर हर पल मीठी यादो में खोयी... देवताओ सी सुंदर बन रही हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कर्मातीत बनने का पुरुषार्थ करना*"

➳ _ ➳ जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण समर्पण भाव और अपनी लाइट माइट स्थिति द्वारा कर्मातीत बन, सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त किया। ऐसे ही फॉलो फादर कर, कर्म से अतीत हो कर, सम्पूर्णता को पाना हर ब्राह्मण आत्मा का लक्ष्य है। *इस लक्ष्य को पाने की मन ही मन स्वयं से दृढ़ प्रतिज्ञा करते हुए, अपने मन बुद्धि को एकाग्रचित करके मैं अपने सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ अपनी स्थूल देह से बाहर निकलती हूँ* और सेकण्ड में मन बुद्धि की लिफ्ट पर सवार होकर, अव्यक्त वतन में पहुंच जाती हूँ और अव्यक्त ब्रह्मा बाबा के सामने जा कर बैठ जाती हूँ।

➳ _ ➳ बाबा के इस अव्यक्त स्वरूप में भी बाबा के साकार स्वरूप की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ रही है जो बाबा की साकार पालना का अनुभव करवा रही है। *इस अनुभव को करते - करते मैं खो जाती हूँ साकार मिलन की खूबसूरत यादों में और मन बुद्धि से पहुँच जाती हूँ साकार ब्रह्मा बाबा की कर्मभूमि मधुबन में जहाँ की पावन धरनी पर बाबा के हर कर्म का यादगार है*। कर्म करते हुए भी कर्म के हर प्रकार के प्रभाव से निर्लिप्त न्यारी और प्यारी अवस्था मे ब्रह्मा बाबा सदैव स्थित रहे, इस बात का स्पष्ट अनुभव हिस्ट्री हाल में लगे साकार ब्रह्मा बाबा के हर चित्र को देख कर स्वत: और सहज ही होता है।

➳ _ ➳ अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी तन में मैं हिस्ट्री हाल में हूँ और वहाँ दीवार पर लगे एक - एक चित्र को बड़े ध्यान से देख रही हूँ। *हर चित्र ब्रह्मा बाबा के कर्म की गाथा सुना रहा है और साथ ही साथ कर्मातीत अवस्था को पाने के बाबा के पुरुषार्थ को भी परिलक्षित कर रहा है*। ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने का ही परुषार्थ अब मझे करना है. यह दढ संकल्प करते ही मैं

स्पष्ट अनुभव करती हूँ कि जैसे अव्यक्त बापदादा मेरे सम्मुख आ गए हैं और आ कर अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया है। *अपने वरदानी हस्तों से बाबा मुझे "कर्म करते भी कर्म के प्रभाव से सदा मुक्त रहने" का वरदान दे रहें हैं*। मस्तक पर विजय का तिलक लगा रहें हैं।

➳ _ ➳ बाबा के वरदानी हस्तों से निकल रही सर्वशक्तियों को मैं स्वयं में समाता हुआ स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ। *अपनी लाइट और माइट से बाबा मुझे भरपूर कर रहें हैं, मुझे बलशाली बना रहे हैं ताकि आत्म बल से सदा भरपूर रहते हुए मैं अति शीघ्र कर्मातीत बनने का तीव्र पुरुषार्थ सहज रीति कर सकूँ*। बापदादा से लाइट माइट और वरदान ले कर अब मैं अपने निराकार स्वरूप में स्थित हो कर, स्वयं को और अधिक परमात्म बल से भरपूर करने के लिए अव्यक्त वतन को छोड़ आत्माओं की निराकारी दुनिया परमधाम घर की ओर चल पड़ती हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं स्वयं को निराकार महाज्योति अपने प्यारे परम पिता परमात्मा शिव बाबा के सम्मुख देख रही हूँ। उनसे निकल रही अनन्त शक्तियों को स्वयं में समा कर मैं स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ। उनकी किरणों की शीतल छाया मुझे गहन शांति का अनुभव करवा रही हैं। उनके सामने बैठ कर उनसे आ रही सातों गुणों की सतरंगी किरणों और सर्वशक्तियों से मैं स्वयं को भरपूर कर रही हूँ। कुछ देर बीज रूप अवस्था में स्थित हो कर अपने बीज रूप परमात्मा के साथ कम्बाइंड हो कर अतिन्द्रिय सुख लेने के बाद और सर्वशक्तियों से स्वयं को भरपूर करने के बाद मैं आ जाती हूँ परमधाम से नीचे वापिस साकारी दुनिया में।

➳ _ ➳ पाँच तत्वों की साकारी दुनिया मे, अपने साकार तन में विराजमान हो कर अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित रहते हुए, हर कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो कर रही हूँ। *बाबा की लाइट माइट से स्वयं को सदा भरपूर करते हुए योग बल से अपने पुराने कर्म बन्धनों को काटने और कर्मातीत बनने का तीव्र पुरुषार्थ अब मैं निरन्तर कर रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं दिल की समीपता द्वारा सहयोग का अधिकार प्राप्त कर उमंग-उत्साह में उड़ने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव श्रीमत के कदम पर कदम रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव सम्पूर्णता की मंज़िल को समीप लाती हूँ ।*
✺ *मैं आज्ञाकारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सहज को स्वयं ही मुश्किल बनाते हो। मुश्किल है नहीं, मुश्किल बनाते हो। *जब बाप कहते हैं जो भी बोझ लगता है वह बोझ बाप को दे दो।*

वह देना नहीं आता। बोझ उठाते भी हो फिर थक भी जाते हो फिर बाप को उल्हना भी देते हो - क्या करें, कैसे करें...! अपने ऊपर बोझ उठाते क्यों हो? बाप आफर कर रहा है *अपना सब बोझ बाप के हवाले करो।* 63 जन्म बोझ उठाने की आदत पड़ी हुई है ना! तो आदत से मजबूर हो जाते हैं, इसलिए मेहनत करनी पड़ती है। कभी सहज, कभी मुश्किल। या तो कोई भी कार्य सहज होता है या मुश्किल होता है। कभी सहज कभी मुश्किल क्यों? कोई कारण होगा ना! कारण है - आदत से मजबूर हो जाते हैं और *बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, यही सबसे बड़ी बात लगती है। अच्छी नहीं लगती है।*

➳ _ ➳ मास्टर सर्वशक्तिमान और मुश्किल? टाइटल अपने को क्या देते हो? मुश्किल योगी या सहज योगी? नहीं तो अपना टाइटल चेंज *करो कि हम सहज योगी नहीं हैं।* कभी सहजयोगी हैं, कभी मुश्किल योगी? और योग है ही क्या? बस, याद करना है ना। और *पावरफुल योग के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती। योग लगन की अग्नि है। अग्नि कितना भी मुश्किल चीज को परिवर्तन कर देती है। लोहा भी मोल्ड हो जाता है। यह लगन की अग्नि क्या मुश्किल को सहज नहीं कर सकती है?* कई बच्चे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, बाबा क्या करें वायुमण्डल ऐसा है, साथी ऐसा है। हंस, बगुले हैं, क्या करें पुराने हिसाब-किताब हैं। बातें बहुत अच्छी-अच्छी कहते हैं। बाप पूछते हैं आप ब्राहमणों ने कौन सा ठेका उठाया है? ठेका तो उठाया है -विश्वपरिवर्त न करेंगे। *तो जो विश्व-परिवर्तन करता है वह अपनी मुश्किल को नहीं मिटा सकता?*

✺ *ड्रिल :- "सब बोझ बाप को देकर सहज योगी बनने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा की याद में खोती जा रहीं हूँ... *बाबा ने मुझ आत्मा को सहज योगी का वरदान दिया हैं...* मैं आत्मा कोई भी मुश्क़िल को सहज ही पार कर लेती हूँ... *कैसी भी परिस्थिति में मैं आत्मा मुश्क़िल में नही आती हूँ...* और ना ही किसी और आत्मा के लिए मुश्क़िल पैदा करती हूँ... प्राण प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ऑफर किया हैं कि *जिस बोझ से मैं आत्मा भारी हो गई थी... उसे मुझे दे दो... मैं आत्मा अपने सारे बोझ बाप को देकर एकदम हल्की हो चुकी हूँ...*

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को किसी भी प्रकार का बोझ महसूस नही हो रहा हैं... *मैं आत्मा अपने सारे बोझ बाप को सौंपकर परमात्म प्यार, सुख और ईश्वरीय जीवन का सुख ले रही हूँ...* मैं आत्मा किसी भी प्रकार का बोझ ना उठाते हुए उड़ रही हूँ... मुझ आत्मा को किसी भी प्रकार की थकावट नही हैं... ना मन की और ना ही तन की... *मुझ आत्मा को कोई उल्हना ना बाप से हैं और ना ही किसी और आत्मा से हैं... मैं सर्व स्नेही आत्मा हूँ...* मैं आत्मा ड्रामा के नॉलेज से एकदम हल्की हो गई हूं...

➳ _ ➳ *मैं आत्मा क्या, क्यों, कैसे या और कोई भी क्वेश्चन में मूँझती नही हूँ...* क्योंकि परमात्मा मेरे साथ हैं, वो मुझ आत्मा को अपने पलकों में बिठाए हुए हैं... *मेरा सारा बोझ परमात्मा बाप ने ले लिया है...* वो पिता की तरह मेरी पालना कर रहे हैं... *मुझ आत्मा के 63 जन्मों के जो संस्कार हैं वो धीरे धीरे ख़त्म हो चुके हैं...* मैं आत्मा किसी भी प्रकार की मेहनत से मुक्त हूँ... मै आत्मा शिव साजन की मोहब्बत से आगे बढती जा रही हूँ... *मै आत्मा कभी भी किसी भी मुश्किल में नहीं आती हूँ...* मै आत्मा निरंतर योगी हूँ... मुझ आत्मा को किसी भी प्रकार के संस्कार मजबूर नहीं करते हैं... *मै स्वराज्य अधिकारी बन सहज योगी आत्मा बन गई हूँ... बापदादा के साथ मै आत्मा मेहनत मुक्त बन गई हूँ...* मुझ आत्मा के पुराने संस्कार समाप्त हो चुके हैं... *व्यर्थ संकल्प और संस्कारो के पीछे मैं आत्मा समय का अमूल्य ख़जाना व्यर्थ नहीं करती हूँ...*

➳ _ ➳ *मै आत्मा मास्टर सर्व शक्तिमान के स्वमान से निरंतर अपने आपको शक्तिशाली बना रही हूँ... मुझ मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा को कोई भी बात मुश्किल नहीं लगती हैं... बापदादा ने मुझ आत्मा को मास्टर सर्वशक्तिमान का टाइटल दिया हैं...* मुझ आत्मा के पास परमात्मा की दी हुई सर्व शक्तियाँ हैं... और उन्हें मै आत्मा समयानुसार यूज़ करती हूँ... *मै आत्मा निरंतर सहज योगी हूँ...* मेरा योग निरंतर एक बाप के साथ हैं... मै आत्मा कभी नही, अल्पकाल या कभी कभी की योगी नहीं हूँ... *बाबा के साथ पावरफुल योग द्वारा मैं आत्मा हर मुश्किल को आसान बना लेती हूँ... योग की अग्नि से मै आत्मा सारे विकारो, पराने संस्कारों को भस्म कर रही हूँ...* जिस प्रकार अग्नि में कछ

भी चीज़ परिवर्तित हो जाती हैं... उसी प्रकार योग अग्नि से मेरे कड़े और पुरानें संस्कार भी परिवर्तित हो चुके हैं... *योग अग्नि और योग के प्रयोग से मुझ आत्मा के चारों ओर एक दिव्य आभामंडल बना हुआ हैं... जिससे हर बात सहज होती जा रही हैं... और ऐसा वायुमंडल बन गया है कि किसी भी अन्य आत्माओं और संस्कारों का असर मुझ आत्मा में नहीं पड़ता हैं...* बाबा ने मुझ आत्मा को विश्व परिवर्तन का कार्य सौपा हैं... *मैं आत्मा स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के कार्य में बाप की साथी हूँ...*

➳ _ ➳ मै आत्मा बाप के साथ और याद द्वारा अपनी सारी मुश्किलों को मिटाती जा रही हूँ... *मै आत्मा अपने सारे बोझ और सारी मुश्किलें एक बाप को देकर एकदम मुक्त हो चुकी हूँ...* जहाँ बाप ने मुझ आत्मा को इतना बड़ा कार्य सौपा हैं, वहां मैं आत्मा किसी भी बात में हार नहीं खा रही हूँ... *सदैव एक बाप का हाथ पकड़ कर आगे और आगे बढती जा रही हूँ... सफ़लता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं...* और दृढ़ संकल्प द्वारा हर कमी कमज़ोरी को समाप्त कर सफ़लता मूर्त बन गई हूँ... *बाबा ने मेरे सारे बोझ ले करके मुझे सहज योगी बना दिया हैं... धन्यवाद बाबा, आपका बहुत बहुत शुक्रिया...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔